

2662

MS. A. 9. 2. 10. 12



2662

1845





पुनः प्रथमं

ॐ नमः श्री गुरुवक्तृ सखाय ॥ ॥ द्वादशमिथ्या  
विधनमाह ॥ ॥ क्रापां पृथ्वि मिथ्या स- द्वादशा  
नं स्नानयाय ॥ ॥ गुरुक नागयाग धूप सिद्धा  
य- द्वादशगुणि वाक् ॥ द्रव्य मष्टिक ॥ अष्टा पान  
मिमाया ० ॥ क्रापां स्निहं चैव नाग दयक ॥ ऊरु  
मानयिं द्वादशास्नानं स्नानयाक वाक् ॥ महादा  
नकाय ० अथ काय ० निमिक्थथ ॥ ॥ अ०



स्मिन्निवस्य वाग्मनि अम्भारुलदायनि संगम  
पृथग्निर्ध्वं दुर्वाकृष्टं पृथग्नि स्नानं कर्माणि ॥  
सेयं नागयूता ॥ धूपकाय ॥ ध्यानं ॥ पंचवृक्षाय  
पंचवर्धाय गजकाय रुक्मं रंगधनं रंगधनं अ  
म्भारुलदायनीय ययसीगमरावयम् ॥ ॥  
आकर्षणं पादार्घ्यं स्नानं वाय ॥ आर्यवेनाचना  
यस्वाहा ॥ ग्रादि ॥ गजकायस्वाहा ॥ नकवर्ध

यस्वाहा ॥ रुद्रिधनायस्वाहा ॥ दिव्यदहायस्वाहा  
॥ ॥ पूजालास्यास्तु ॥ नमस्तु गयामन्यस्यः सर्व  
स्वाय अम्भारुलदायनी रंगधनं वाग्मनी संग  
म गजकाय नकवर्ध दध्याय हजनि नागनभा  
रुक्मं ॥ पूजहाय ॥ अर्घ्याय ॥ ॥ धनं धानयाय  
गू ॥ सिक्त्या गू लथलसं गुलसिलं खगया ॥ ग्व  
लं वसिक्तु रत्नलासं नकचंदनं गाला ॥ १२ गया दा



नविश्या ॥ अथ दानपत्रिकाया ॥ अस्मिन् पृथग्विधं  
 मासकंदं कलसहिमन मासपात्रनकचन्दनस  
 हिमन दानदासादागव्यं ॥ १ ॥  
 धनं गेनिद्यामस ॥ अस्मिन् वाग्मनि मानदायिनी  
 संगम अंगमीर्धं सामगिरिनाग ॥ कृष्णधूपः  
 सायत्कि ॥ अंरवद्वय ॥ अक्षयपत्रिस्नानं स्नानया  
 य ॥ गंतव्यहृया ॥ ॥ स्नानयायवाक ॥ अस्मिन्

श्री ग वि

मानदायिनी वाग्मनि संगम अंगमीर्धं कृष्ण  
 दावविनायकय दातिमयूष्यनस्नानं कथा मि ॥  
 सेयनागयूजा ॥ धूपध्यान ॥ यंचवृद्ध सामगिरि  
 नाग शुक्लवर्धु विरावथ ॥ ॥ आ-या-पू-॥  
 आर्यवेनाचनाथगादि ॥ सामगिरिनागना  
 कायनमस्वाहा ॥ शुक्लवर्धुयस्वाहा ॥ अंकमी  
 र्धयनमः स्वाहा ॥ रुद्रिधनायस्वाहा ॥ दिव्यव



धुर्जनमः स्वाहा ॥ ॥ पूजा लाक्षा ॥ नमस्कृतं  
 च वृक्षानां भातं दहिनमानमः ॥ अहिनाथ शुक्लवः  
 ह्यु संगमीर्थ वाग्मनि मानदायनि नमस्कृतं ॥ ॥  
 पूजयाय ॥ अर्घ्यविय ॥ ॥ दानयाय गुरुमे दान ॥  
 अथ दानयनिकाय ॥ अस्मिन् संगमीर्थ ० गमे दा  
 न दासा दानव्यं ॥ ॥ मालन ॥ मय ॥ पी ० गुरुकृ  
 नी ॥ २ ॥

०१ कनकाय

०१ कनकीर्थया ॥ ॥ अस्मिन् वाग्मनि मद्यिनाहि  
 नीसंगम ०१ कनकीर्थ ०१ रवपालनाग. वाल धूप.  
 प्रियंगु रूकि ॥ लाउरुद्रव्य ॥ लउं कि रुखा नं रूना  
 नयाय ॥ दधरुमिठवनपाथयाय ॥ ॥ मालरूयक  
 वाक् ॥ अस्मिन् वाग्मनि मद्यिनाहिनी प्रिवधी ०१  
 कनकीर्थ सर्वपाथप्रथमनाय कृतीयमास ५ ३  
 वायुस्थनं रूनां कनामि ॥ ॥ वेगुनाग पूजा ॥ धूप



काम धाम नयाय ॥ गंगा लपना वाग्मनि सह नूत धना  
 महिनी हिनी संगम ॥ कननाम महागिर्ध वेना  
 चनादि महावृक्ष ॥ रवपालना एतद् ॥ गेनवर्धु  
 रावथ ॥ ॥ आ. पा. पू. ॥ आर्य वेना चनाय ग्या  
 दि ॥ ॥ कनगीर्धय नमः स्वाहा ॥ ॥ रवपालाय स्वा  
 हा ॥ ॥ गेनवर्धुय स्वाहा ॥ दिव्यवर्धुय स्वाहा ॥  
 प्रकालाया स्वाहा ॥ आकाशवर्धुय स्वाहा ॥ विधाय

सुवमध्वनं ॥ ॥ रवपाल ॥ गेनवर्धु गेनामय मन  
 मः ॥ ॥ प्रकालाय ॥ अर्घविय ॥ ॥ दानविय ॥ ॥ अह  
 याचंद्रमा धतु ग्युताकि कयास श्रीरवंत ॥ ला ॥ १२  
 कय कंसया रवाला गुयुग्वरु दान ॥ अय दानय  
 गिकाय ॥ अस्मिन् ॥ कनगीर्ध ॥ नऊनचन्द्र विंव  
 दधि ॥ १४ गगन धूल श्रीरवंत कर्पून कंसपात्र ॥ १४  
 गवस्तु सहिगन दान दानव्य ॥ ॥ पालन ॥ १५ मूय  
 पीथ काक ॥ ३ ॥



धननागमीर्थया॥ वाग्मनि नागमंजलि संगम नाग  
मीर्थसूत्रयनागः श्रीरवंद्रुधूप कस्मिन्नेके नील  
डव्य॥ ॐ नाथिगायाचानं भास्करयकः समाधिनागा  
पाथ॥ ॥ स्नानयाक वाक् ॥ अस्मिन् वाग्मनि ना  
गमंज्या नदी संगम नागमीर्थ नागस्य गसुरव  
साफथः चतुर्थमास पावावानामृत्तिकायां स्नानं  
कनामि॥ ॥ चैत्यनागपूजा॥ धूपकाय॥ ध्यानयाय

नागमंजनी वाग्ममी निर्मलपंचवृक्ष सूत्रयनाग  
शुक्लवर्णं विहावथम्॥ ॥ आ. सा. पू॥ आर्यधेनाच  
नायः ॐ नादि०॥ नागमीर्थयनमः स्वाहा॥ सूत्रयना  
गनाकायनमः स्वाहा॥ शुभ्रवर्णयनमः स्वाहा॥  
नागकायनमः स्वाहा॥ ॥ पूजालास्याभाष॥ नम  
स्ते पंचवृक्षाय सर्वदुर्गमिनाशन सूत्रयनागना  
का सुरवंदहि नमः स्तुत॥ ॥ पूजकाय॥ अर्घविथ



दानकाय ॥ निसला . पंचपात्र . सिद्धया अर्घवा . पूजा  
 अंगु ऊपमाला दानकूल ॥ दानयगिकाय ॥ अस्मि  
 ननाऊनी ॥ ५ ॥ नेव यपात्र पंचपात्र गामादि अर्घवा  
 यमूर्ति कऊपमालादि सहित दानदागव्यं ॥ ॥  
 पी० धर्मिलवानाहि . पालं सादूदू ॥ ४ ॥ ॥  
 समानधर्मिर्था ॥ विमलावनि कञ्जवगिसंगम  
 समानधर्मिर्था ॥ कलिकनाग . कलूच धूप . कुंकू

मल्लिकि . कर्कमनद्वय . ऊयमासनं स्नानयाय . लं  
 कावगानपाठ ॥ ॥ मालकूयक ॥ वाक ॥ अस्मिन्  
 कञ्जवनि विमलावनि यत्र संगम समानधर्मिर्था  
 पंचममास ० कर्मणि ऊयमासनं महं स्नानं क  
 नाभि ॥ ॥ चेयनागपूजा ॥ धूपकाय ॥ ध्यानयाय  
 ॥ पंचवृद्ध विचित्रपंकवृद्ध कलिकनागरुद्वय  
 धनं समानधर्मिर्थावथ ॥ ॥ आ . पा . पू ॥ आर्यवे

गभीरार्थ  
 ५



वाचनाय नमः ॥ कलिकाय नमः स्वाहा ॥ कर्वूदवह्नी  
 य नमः स्वाहा ॥ कृष्णमधिधनाय स्वाहा ॥ मनान  
 धाय नमः स्वाहा ॥ ॥ पूजालास्यास्तु ॥ नमस्तु  
 गीष्वाय जगदुक्तानि सर्वदाः ॥ कर्वूदवह्नी  
 ननागं विमलावगि कञ्जवगि सह मनानर्थनमा  
 मि ॥ ॥ पूजहाय ॥ अर्घ्यविय ॥ ॥ पी० मनमाक  
 पालनकस्ति ॥ ॥ दानयाय गुरुवह्नी ॥ अस्मिन्म

मानधनिर्ध० वस्तुदानं दामव्यं ॥ ५ ॥ ॥  
 निर्मलनिर्धया ॥ ॥ कञ्जवगि हृदमदि संगम  
 निर्मलमीर्थ ॥ उयलालनाग ॥ कर्पूनधूप ॥ १००  
 गंजलहृकि ॥ ऐषादव्य ॥ सुद्धर्मपुष्टनी काया  
 धयाय गुरु ॥ ॥ कनविनस्वानं भालहृयक ॥ अ  
 स्मिन् कृष्णमावगि कञ्जवगि संगम निर्मलमी  
 र्थं वस्तुममाक्ष० कर्मधि कनवीनपुष्पनस्ता

निर्मलनिर्धया



नं कनामि॥ ॥ नैमनागपूजा॥ जायधुय॥ ध्यान  
 निर्धसुनिर्मलं चैव कसुमावगि कथं वगिध  
 मधुगुत्तपलालनाग कल्पनां विद्यनामयनि  
 र्मलनिर्धविद्यावयम्॥ ॥ आ. पा. पू॥ आर्यवेमा  
 चनाथग्यादि॥ उत्पलालनागनाकायनमः स्वा  
 हा॥ निधनाय स्वाहा॥ दिव्यवधुय स्वाहा॥ पि  
 गवधुय स्वाहा॥ विद्यनाथय स्वाहा॥ निर्मल

निर्धय स्वाहा॥ ॥ पूजालास्या स्वाहा॥ नमामि वृद्धवी  
 नाय सर्ववीनाय सर्वविद्यासथ कसुमावग्याय  
 संगमनमः॥ ॥ पूजहाय॥ अर्घ्याय॥ ॥ दानपू  
 रुक॥ सिद्धया कल॥ यथाग्रथना दानवियग  
 ॥ अथ दानपगिकाय॥ अस्मिन् निर्मलनिर्धं पू  
 रुक गामकल॥ दिदानदानव्यं॥ ॥ धीथविद्या  
 धनी॥ यालसाधल॥ ५ ॥ ॥ ॥



निधननिर्धय

निधननिर्धय॥ ॥ कञ्जवनि सूवर्णवनि संगम.  
निधननिर्धय॥ नन्द उपनन्द नाग॥ धूपसिक्ताय॥ ह  
कि सादृ॥ नीलद्रव्य॥ गन्धगन्धककापाथ॥ दान  
वियगू. पूजक १ लूचकि चकि॥ पी० कंकठवनी  
॥ यालंसाधल॥ ॥ लूंगरुखान. अथवा. अकिखा  
नं भालहूयक॥ अस्मिन् कञ्जवनि सूवर्णवनि  
संगम निधननिर्धय निधननेष्टय्यरुलसाफथ

सकसमास० कर्मणि हंसपूष्यनस्त्रानंकजामि॥  
॥ ॥ चैत्यनागपूजा॥ धूपकाय॥ धन॥ गन्धालयना  
कञ्जवनी सूवर्णवनी नन्द उपनन्द निधननी  
र्थ वेनाचनादि महावृक्षदावथ॥ ॥ आ. पा. पू.  
आर्यवेनाचनाथमादि०॥ नंदनागनाकायस्वाहा  
उपनंदनागनाकायस्वाहा॥ ककुवर्णयस्वाहा॥  
निधननीर्धयस्वाहा॥ दिव्यदहायनमः स्वाहा॥



पूजा लासा सा ॥ नमस्कृत्य च किनाय सर्वदुर्गनि  
नाशनं ॥ नन्द उमनन्द नाग सर्वनिधन ऐश्वर्यप  
दं नीधननीर्थ नमस्कृत्य ॥ ॥ पूजकाय ॥ अर्घ्याय  
॥ दानकाय ॥ वाक् ॥ अथ दानपत्रिकाय - निधन  
नीर्थ ० १४४ नमस्कृत्य सुवर्ण दान दान दान ॥ ७ ॥  
ह्रीं नमिर्था ॥ ॥ कथमवनि पापनाशिनी नदीसंग  
महाननीर्थ ॥ बालसुकिनाग ॥ धूप गंग ॥ सुकिना

मर्कटद्वय ॥ ललितविक्रमपाथ ॥ सिना दान ॥ पी  
० मचनि महालक्ष्मी ॥ बालं सुल सुल ॥ गुयूगु गंग  
नंमालक्ष्मी ॥ अस्मिन्कथमवनि पापनाशिनि  
संगम ह्रीं नमिर्था अष्टममाश ० कर्मणि ॥ १४४ न  
दुर्वापुष्प न ह्रीं नमिर्था ॥ ॥ चैत्यनागपूजा ॥  
धूपकाय धूम ॥ नमस्कृत्य ननीर्थ पापनाशिनी क  
थमवनि सर्वसु महावीन बालसुकिनागभवच ॥



आभा कार्यालय

2662

ARCHIVES



अनूपंरुद्रभक्तानं दिव्यनूपं विरावथम् ॥ ॥ आ. पा.  
पू. ॥ आर्यवेना, चनाथग्यादि ॥ ॥ हाननीर्थयस्वाहा  
अहाननाथयस्वाहा ॥ वालसूकिनागनाकायस्वा  
हा ॥ रुद्रिमंठिनायस्वाहा ॥ शुक्लवर्धुयनमः स्वा  
हा ॥ ॥ पूजा लास्यास्वाहा ॥ ॥ पवित्रहाननीर्थच  
हानध्वंसिर्गुरुं ॥ वासूकिनामनागन्दं दिव्य  
धरसुखप्रदं ॥ पंचवृक्षधर्माधुनं सर्वकालं न



विष्णुसूक्तम्

मास्तुभ ॥ ॥ पूजयामास ॥ अर्घ्यविषय ॥ ॥ दानविषय  
युहिना ॥ अय-दानपणिकाय ॥ अस्मिन्नुक्तान्ती  
र्थ ० मंजुल लवण मास घृण साकादि दानदा  
नव्यं ॥ २७ ॥ ॥ ॥  
चिंगामस्तिमिर्था ॥ ॥ वागमनि कथमवनि सं  
म यमुना सुनस्वनी संगम चिंगामस्तिमिर्था ॥ व  
नृधनाग ॥ श्रीरवंत धूप ॥ घृणरुकि ॥ रुनाइव

सुवर्णप्रसादा ॥ दानपंचवीहि-दीप-घ  
ना ॥ पी ० पचलिहोनव ॥ पालं वाहा ॥ ॥ पंचा  
मृग-धन कलि सारव ॥ धी सादूदं दानयाच  
क ॥ अस्मिन् वागमनि कथमवनि संगम चिंगा  
मस्तिमिर्था नवममास ० कर्मणि र्चिचामृगन  
स्तानं कनामि ॥ ॥ चैमनागपूजा ॥ धूपजाप  
धन ॥ नृगवागमनि कथमवनि संगम समारवा



न चिंतामणि सर्वकार्यसंपदं ॥ वनूद्यनागधु  
 क्ववर्धु गंगयमुनासुवर्गी नदी पंचवृद्ध  
 लोकध्वजं तावथ ॥ ॥ आ-पा-पू ॥ आर्यवेना  
 चनाथमादि ॥ वनूद्ययस्वाहा ॥ शुक्लवर्धुय  
 स्वाहा ॥ रुद्रधनायस्वाहा ॥ गंगादिपंचनाग  
 यस्वाहा ॥ चिंतामणिमिथ्यनमःस्वाहा ॥ ॥  
 पूजालासास्वाहा ॥ नमस्कृपंचरुद्राय सर्वसुखसु

खप्रदं ॥ वनूद्यनागधवलवर्धुः सर्वकामार्थसं  
 पदं ॥ कश्चिद्विवागमनि चिंतामणिमीर्थनम  
 स्कुकारिध्वनं नमः ॥ ॥ पूजहाय ॥ अर्घ्यविय ॥  
 दानकाय ॥ अर्घ्य-दानपणिकाय ॥ चिंतामणि  
 मीर्थ-वेकनद्वीनदीगानद्वीर्थ-घटपंचव्री  
 हिदीयसहिमन दानदानव्यं ॥ २ ॥ ॥  
 प्रभादमीर्थया ॥ ॥ वागमनिनलावगीनदी

यजुर्मोदतिथ



संगम प्रभादनीर्थ ॥ पद्मनाग ॥ गुरुसिद्धय ॥  
सुखगुरुकि ॥ पूष्यनागद्वय ॥ पंचनकापाथ ॥ पा  
ली श्रीवल ॥ पी० लाहगल ॥ कायधी ॥ दानविय  
गुरुकवरु ॥ ॥ चतुलखानंभालहूयक ॥ अस्मि  
नवागमनि जलावगिसंगम प्रभादनीर्थ दश  
मसाध ० कर्मणि केनवपूष्यनखानंकनमि ॥  
वेपनागपूजा ॥ धूपजाप ॥ ध्यान ॥ वागमनि

जलावगिसंगम प्रभादनामनीर्थ नमि श्रीमि  
वधमर्थदं पद्मनाग शुभवर्धु रुधकांनराव  
यश ॥ ॥ आया-पू ॥ आर्यवेनाचनाथयादि  
० ॥ पद्मनागयनमः स्वाहा ॥ शुक्लवर्धुयस्वा  
हा ॥ रुधधनायस्वाहा ॥ वागमनिथस्वाहा ॥ न  
लावनीथस्वाहा ॥ ॥ पूजालास्यास्वाहा ॥ नम  
रुपंचवृक्षाणां सर्वसत्त्वसूखप्रदं ॥ पद्मनागम



हावीनं गम्भीरीर्धायनमः॥ ॥ पूजहाय॥ अ  
र्धयाय॥ ॥ दानकाय॥ अय-दानयनिका  
य॥ अस्मिन् प्रभादमीर्ध० नक वस्तु दानदा  
गव्यं॥ १० ॥ ॥ ॥

सुलज्जहमीर्धया॥ ॥ वागमनि चानुमनि संगम  
सुलज्जहमीर्ध॥ महायज्ञनाग॥ श्रीरवंश कर्पूजधू  
प॥ काल इदं रुकि॥ मुनिद्वय॥ सफवानपा०

यायगु॥ दानवियगु-गुयगुआकि गुयगुवस्तु  
पालं गुसि॥ पी० दाऊंग विकुवि॥ ॥ हाक  
हाभालं भालरूपक॥ वाक॥ अस्मिन् चानुम  
नि वागमनि संगम सुलज्जहमीर्ध० एकादश  
मास० कर्मणि ककुमिलनस्तानं कभाभि॥ ॥  
चेयनागयुगा॥ धूपजाय ध्यानयाय॥ वागम  
नि चानुमनि यविशायं सुलज्जह महायज्ञना

सुलज्जहमीर्धया



गनाका शुक्लवर्धु श्रीधर्मधरुं नमस्कृतं ॥ ॥  
आ. पा. पू. ॥ आर्यवेनाचनाथग्यादि ॥ महापद्मा  
यनमः स्वाहा ॥ शुक्लवर्धुय स्वाहा ॥ श्रीरुद्रायुका  
य स्वाहा ॥ सुलकुटुमीर्धाय स्वाहा ॥ ॥ पूजा ला  
स्या ॥ नमस्कृतं सर्ववृक्षाय हानदुहि सर्वदा  
महापद्मनागनाका गम्भीरीर्धायवेनमः ॥ ॥  
पूजाहाय ॥ अर्घ्यविय ॥ ॥ दानकाय ॥ अथ

दानपत्रिकाय ॥ अस्मिन्सुलकुटुमीर्धाय + स्व  
गर्गुल स्वगवस्तु दानदानव्यं ॥ ११ ॥ — ॥  
ऊयमीर्धया ॥ ॥ वागमगी प्रदावगी सुग  
म ऊयमीर्धय ॥ श्रीकामिनागनाका ॥ कर्पूनाधूय ॥  
प्रिमधूरुकि ॥ रुटिकद्वय ॥ कनूधमपुष्टनी  
कायाथ ॥ दानवियगु सिजया कुलघटदान  
सयादान ॥ पालं धाल ॥ पीथ मयूहं सु वृक्षा



यदि॥ ॥ श्रीखंडनंभालकृतयक॥ अस्मिन्वागम  
निप्रसावनि संगम कृत्यमीर्थं सर्वानि कुरुय प्रथ  
मनार्थं द्वादशमासं० कर्मणि श्रीखंडनस्तानं क  
नामि॥ ॥ श्रीगुणागपूजा॥ धूपजाप॥ ध्यान॥  
वागमनि प्रसावनि संगम श्रीकांतिनागनाका  
शुक्लवर्णं द्वादशयुग॥ ॥ आ. पा. पू॥ आर्यवे  
आचनाथमि॥ श्रीकांतिनागनाकाय स्वाहा॥ दि

वरुणाय स्वाहा॥ सुवर्णाय स्वाहा॥ प्रसावनी  
कृत्यमीर्थं यनमः स्वाहा॥ ॥ पंचापचानपूजा  
लास्यास्तु॥ नमस्तु पंचकिनाय आदिनाथस्व  
यंरुव॥ यशनागमधियाकानि अनीत्यनाथनी  
कृत्यमीर्थं नाकुं नभास्तु॥ ॥ पूजहाय॥ अर्थ  
विय॥ ॥ दानकाय॥ अथ दानपणिकाय  
अस्मिन्कृत्यमीर्थं० स्यादनादि मां प्रकृत



घटदानं दामव्यं ॥ १२ ॥ ॥ ॥

आसन कठायाम्बर मङ्गसा चलाया कुंभमाला ॥  
ॐ मिहादशमीर्थ पूजाय नमः ॥ ॥











